**International Journal of Academic Research and Development**
**ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22**
**www.academicsjournal.com**
**Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 838-840**

# प्राचीन भारत में मृत्तिका शिल्प

**उमेश कुमार**

इतिहास प्राध्यापक, रा0व0मा0वि0 जसराणा, सोनीपत, हरियाणा, भारत।

**सारांश**

एक को अनेक रूप देना ही शिल्प है अर्थात् विभिन्न कलाएं जो मुख्य रूप से हाथों से रूपांकित होती हैं हस्त शिल्प कही जाती हैं। इसका निर्माण करने वाला शिल्पकार कहा जाता है। प्राचीन ग्रन्थों में कला और शिल्प को एक ही विद्या के अंतर्गत माना गया है लेकिन वैदिक साहित्य में उनकी पृथक–पृथक उक्ति भी मिलती है। देवताओं के प्रधान शिल्पी विश्वकर्मा को शिल्पवतानवद और कला विदमावर दोनों की कहा गया है। शिल्प विद्या के अंतर्गत मृदभाण्ड–शिल्प, काष्ठ शिल्प, वस्त्र शिल्प, मूर्तिकला, वास्तु शिल्प,चित्र शिल्प, उद्यान शिल्प, यंत्र शिल्प प्रभृति आदि अनेक शिल्पों का समावेश होता है। प्राचीन भारत में शिल्पकला को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता था।

**मुख्य शब्द :** मृदभाण्ड, मृण्मूर्तियां, मृतपात्र, मुखोटे, ठीकरे, भस्मावशेष, उत्कृष्ठता, पात्र

## प्रस्तावना

मनु ने जीवन निर्वाह कि दस स्थानों में दूसरा स्थान शिल्पियों का रखा था।[1] हरिवंश पुराण में जीवन के 6 साधनों में शिल्प को पॉचवें स्थान पर रखा गया है।[2] मृदभाण्ड बनाने वाले कुम्भकार या कुम्हार का नाम शिल्पकारों में सबसे पहले आता है जो मिट्टी के सुन्दर बर्तन बनाताा है। आवश्यकता बढने पर कुम्हार ने बर्तनों के अलावा अन्य सामान का निर्माण करना भी शुरू किया जिसमें उसने अपनी कलात्मकता का परिचय देते हुए श्रेष्ठ निर्माण किये।

मृत्तिका या मिट्टी का प्रयोग मानव अपनी आवश्यकताा के लिए प्रारम्भिक काल से करता रहा है। मृत्तिका शिल्प में विभिन्न वस्तुएं, मृत्पात्रों, ईंट, बांट–बंटवारे, दो–तीन छेद वाले तकुएं, मृण्मूर्तियों एवं बच्चों के विविध आकार–प्रकार के खिलौने आदि मिलते हैं। इनमें स्त्री–पुरूष आकृतियॉ, खिलौना गाडी,सींगयुक्त मुखौटे भी मिले हैं। सैन्धव सभ्यता का विस्तार क्षेत्र बहुत बडा था तथापि विविध स्थानों से प्राप्त मिट्टी के उपकरण या अन्य वस्तुओं में समानता के आधार पर इस सभ्यता के लोगों में समानता प्रदर्शित होती है।

हडप्पाकालीन स्थल ब्लूचिस्तान में कीलींगुल मुहम्मद में हाथ के बने मिट्टी के बर्तन मिले हैं। इसके बाद के काल में चाक पर बने बर्तन भी लगभग हर जगह से मिले हैं। मृतपात्रों में विशालकाय मटको से लेकर 1/2 इंच उचाई वाले लघु पात्र शामिल हैं।[3] विशिष्ट आकार–प्रकार में कलश, नांद, तबले सुराहियां तथा नलियाकार पात्र शामिल हैं।

पूर्व में दाओजली हैडिंग के उत्खनन में हाथ के बने मृदभाण्ड मिले हैं। ये मृदभाण्ड चीन के मृदभाण्डों के अनुरूप हैं।[4] बुर्जहोम के मृदभाण्ड भी हाथ के बने हैं उनके कुछ कटोरों और कुछ बोतलों के आकार के हैं।[5]

अच्छी किस्म की मिट्टी में कुम्भकार बालू, चूना, अथवा अभ्रक मिश्रित कर तीव्र गतिक चाक पर बर्तन बनते थे। बर्तन बनाने के बाद ऑच में पकाये जाते थे। भट्ठी वृताकार एवं गुम्बदाकार होती थीं। मोहनजोदडो से 6 आवों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। मिट्टी के पात्रों की पहचान उनकी मिट्टी, पकाने के प्रकार, बर्तन की बनावट, उनकी रंगाई, चित्रण एवं क्षेत्रीयता के आधार पर होती है[7] जैसे – लाल पात्र, चित्रित धूसरपात्र हिरंगी, दूधिया, चाकलेटी पात्र भी मिले हैं। पात्रों के अलंकरण में बैंगनी, लाल तथा दूधिया रंगों का प्रयोग किया गया है। हत्थेदार एवं छिद्रित पात्र भी मिले हैं।[8]

अलंकरण के अभिप्रायों में त्रिकोण, सीढीदार या अन्य ज्यामितीय आकार, मत्सत्य, शल्क, अर्द्ध–चन्द्र, फन्दे के अतिरिक्त ताड, खजूर बबूल, पीपल एवं इनकी पत्तियां, मछली सांप, वृषभ, मयूर, हिरन,बारहसिंगा तथा बतख प्रमुख थे। हडप्पा से प्राप्त एक ठीकरे पर एक पुरूष एवं एक शिशु की आकृति अंकित है। कालीबंगा से प्राप्त एक मृण्पात्र पर अक्षर अंकित हैं।

मोहनजोदडो एवं हडप्पा से मिट्टी के बर्तन, सींगयुक्त मुखौटे प्राप्त हुए हैं। इसी प्रकार बनावली से खिलौना हल की प्राप्ति उल्लेखनीय है। छोटी–बडी सेंडलनुमा, ओपदार, चिकनी ईंटों का निर्माण शिल्पियो की कुशलता का नमूनाा प्रदर्शित करती है मातृदेवी। कूबडयुक्त बैल छल्ले भी इस काल में मिट्टी के बने मिलते हैं।

ताम्राश्मयुगीन सभ्यता के अनेक स्थनों से विशिष्ट मृण्पात्र मृण्मूर्तियों तथा मातृदेवी, बच्चों के खिलौने, चाक, चूल्हे आदि मिलते हैं। वैदिक काल में अनेक नये उद्योगों एवं व्यवसायों का जन्म हुआ। सोने, चांदी, तांबे, सीसे,, लोहे का प्रयोग बढने लगा था। वैदिक साहित्य में कुम्भकार (मृत्यच,[10] कोलाल[11]) एवं मृण्मयपात्र का उल्लेख पाते हैं। मृण्पात्रो में खाना पकाने वाला बडा बर्तन 'उरवा' कलश, कुम्भ (घडा) कुंड (पानी रखने का पात्र) स्याली (थाली) छोटा प्याला या सकोरा 'कपाल' वर्णित है।[13] संभवतः 8 इंच व्यास वाली थालियों में भोजन पकाया जाता था और खाया जाता था।[14]

एन.आर. बनर्जी ने अथर्ववेद में आये नीललोहित शब्द का अर्थ नीलारंग चढा धूसर मृदभाण्ड कहा है।[15] यद्यपि अधिकांश विद्वानों का मानना है कि यह शब्द मृतपात्र के लिए प्रयुक्त नहीं हुआ है।[16] वैदिक काल में कुम्भकार भली–प्रकार से तैयार मिट्टी से सुन्दर आकर्षक एक मजबूत पात्र बनाने के लिए उसमें बालू, बकरी के बाल, प्रस्तर एवं लोहे का चूर्ण मिलाते थे। बर्तन बनाने के बाद उसे भट्ठी में पकाया जाता था।[17] इस काल में बर्तनों पर विभिन्न प्रकार का अलंकरण किया जाता था। सामवेद के अनुसार गीले मृतपात्रों पर किए गए अलंकरण को ब्रहम भी नहीं मिटा सकते है।

बुद्ध काल में विभिन्न कर्मो के शिल्पियों के अलग–अलग ग्रामों का वर्णन मिलता है। जातक कथाओं में कुम्भकारों द्वारा बर्तन बनाने के लिए नदी, झील, तडागों के किनारे मिट्टी खोदने, सानने, चाक पर बर्तन बनाने सुखाने, पकाने एवं रंगने और अलंकृत करने का विवरण मिलता है।

मौर्यकालीन मैगस्थनीज के विवरण के आधार पर डियोडोरस लिखता है कि इस काल में शिल्पियों के हितों की रक्षा होती थी। कौटिल्य भी वर्णन करता है कि शिल्पियों को राजकीय सहायता मिलती थी एवं उनसे कर नहीं लिया जाता था।[18]

मौर्योत्तरकालीन साक्ष्यों में कुम्भकार[19] तथा धार्तकार (घडा बनाने वाले) का उल्लेख मिलता है। इस काल के उत्तरी काली पालिश वाले मृदभाण्ड तक्षशिला से मिले हैं। मार्शल ने इनकी प्रशंसा की है। तक्षशिला से मिले मृदभाण्डों पर विदेशी प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।[20]

याज्ञवलक्य[21] ने कुम्भकार द्वारा मिट्टी, डण्डे, चाक से घडे बनाने का वर्णन किया है। पतंजली के अनुसार कुम्भकार मिट्टी के पिण्ड तोडकर घडे एवं नांदे बनाते थे। विभिन्न आकार–प्रकार के बर्तनों के अतिरिक्त कुम्भकार रंगीन खिलौने, वाद्य तथा सांचे भी बनाता था।

गुप्तकाल में मिट्टी के बर्तन तथा अन्य वस्तुएं बनाने वाले शिल्पियों के लिए सामान्य शब्द कुम्भकार घटकार[22], घटकृत[23] आदि था। इस काल के विशिष्ट मृदभाण्ड लाल भाण्ड कहलाते हैं। मिट्टी के बर्तनों में अनेक प्रकार की हंडिया कटोरे, मरतबान, धूप में जलाने के स्टैंड, छोटे व बडे व बडे घडे आदि मिले हैं। इनमें से अनेक बर्तनों पर चित्रकारी की गई है। अहिच्छत्रा से पकी मिट्टी की बनी[24] गंगा, यमुना की आदमकद मूर्तियां मिली हैं, इनके अलावा अहिच्छत्रा में एक अनुपम सुराही[25] मिली है जिसमे टोंडी है और रस्सी के आकार का हत्था है। इस क्षेत्र में मृत्पात्रों में हैंडल के आकार–प्रकार एवं अलंकरण में पर्याप्त विविधता तथा कलात्मक उत्कृष्टा मिलती है। मिट्टी के विभिन्न आकार–प्रकार के मनके बनाने के उद्योग गुप्त काल में थे।

इस काल में खिलौनों में अधिकतर देवी–देवताओं की मूर्तियां हैं परन्तु कुछ अन्य साधारण पुरूषों और स्त्रियों की भी मूर्तियां हैं तथा पशुओं की आकृतियां भी इन खिलौनों में हैं।[26]

मृत्तिकाशिल्प में केवल मिट्टी के बर्तन ही नहीं हैं। मिट्टी मानव के जीवन से जुडी है,आर्थिक किया–कलापों का मुख्य स्त्रोत रही है। सृजन के विविध रूपों में कलाकार ने मिट्टी को अपने रूपांकन का माध्यम भी बनाया है। उतर प्रदेश एवं बिहार के मैदानी भू–भाग में अहिच्छत्र, राजघाट, कौशाम्बी, मथुरा, पटना, बेलवा आदि स्थलों से अत्यन्त आकर्षक मृण्मूर्तियां मिली है। मध्यप्रदेश में पवाया एवं बरहेड से भी आकर्षक मृण्मूर्तियां मिली हैं।[27]

मथुरा से लोक जीवन से जुडी हुई मृण्मूर्तियों की प्राप्ति उललेखनीय है। यद्यपि ये मृण्मूर्तियां मुख्यतया हिन्दू देवी–देवताओं की अधिक मिली हैं, किन्तु इसके साथ ही मूर्तियां सभ्रान्त नागरिकों तथा साधारण लोगों के जीवन पर भी प्रकाश डालती हैं। ये मूर्तियां टीलों से या यमुना नदी के किनारे से मिली दो प्रकार की हैं–

1 सांचो से निर्मित की गई मूर्तियां

2 हाथ से गढकर बनाई गई।

पहले प्रकार की मूर्तियां शुंगकाल से मध्यकाल तक की हैं। दूसरे प्रकार की मूर्तियां शुंगकाल की है। इनमें हाथी, घोडे, बन्दर गाडी आदि की आकृतियां भी हैं।

मथुरा संग्रहालय में मृण्मूर्तियों में राजसी ठाठ में पंखे लिए स्त्री आकृति, रथारूढ राजकुमार की मूर्तियां, स्त्री –पुरूष जोडा आकृति, किन्नर युगल,, स्त्री–बच्चे की आकृति, सुन्दर बालों से सजे पुरूष की आकृति उल्लेखनीय है। संकिया (फरूखाबाद जिले) से शुंगकाल से गुप्तकाल तक की आकर्षक मृण्मूर्तियां बडी संख्या मे मिली हैं। इनमें स्त्री–पुरूषों के सिर व धड, दम्पति प्रतिमाएं, लक्ष्मी अभिषेक उल्लेखनीय हैं। यहॉ से मिट्टी की अभिलिखित मुद्राएं भी मिली हैं।[28] अतरंजीखेडा से शुंग कुषाण एवं गुप्त कालीन मृण्मूर्तियां, ठप्पे आदि मिले हैं।

बिलसड एवं भीतरगांव से अनेक आकर्षक कलात्मक मृण्मूर्तियां मिलती हैं। भीतरगांव से प्राप्त देवी–देवताओं, पशु–पक्षियों आदि की मूर्तियॉ राजकीय संग्रहालय लखनउ में सुरक्षित हैं।[29]

मथुरा के पश्चात् कौशाम्बी तत्कालीन भारत का दूसरा महत्वपूर्ण मृण्मूर्ति निर्माण का केन्द्र रहा था। यहॉ से हजारों मृण्मूर्तियां मिली हैं। मृण्मूर्तियों के साथ ही गुप्तकालीन मनके भी यहॉ से बहुसंख्या में मिले हैं। प्रयाग संग्रहालय में सुरक्षित ये मूर्तियां तत्कालीन सामाजिक जीवन, वस्त्र अलंकरण आदि पर प्रकाश डालती हैं।[30] भीटा से मिट्टी की अभिलिखित मुहरें मिली हैं।[31]

अहिच्छत्रा वर्तमान बरेली जिले में स्थित है। यहॉ की गुप्तकालीन मृण्मूर्तियां अत्यधिक सुन्दर हैं, इनमें पार्वति का आकर्षक केशविन्यास युक्त मस्तक, शिवशीर्ष, किन्नर युगल, मिथुन मूर्तियॉ एवं अन्य पौराणिक मूर्तियां स्त्री–पुरूषों के शीर्ष उल्लेखनीय हैं।

इसी प्रकार सारनाथ, श्रावस्ती, पिपरावा भी काफी उल्लेखनीय हैं। पिपरावा में मौर्यकाल से पूर्व के एक स्तूप से प्राप्त मिट्टी के पात्र 5वीं सदी ईस्वी पूर्व का ब्राह्मी लेख इसी सन्दर्भ में उल्लेखनीय है जो लखनउ संग्रहालय में सुरक्षित है। इस अभिलेख को जो कि भगवान बुद्ध के भस्मावशेषों पर निर्मित है शाक्य वंशी सुकिति भाईयों, उनकी बहनों, बच्चों और स्त्रियों ने प्रतिष्ठित किया था।[32] कुशीनगर से प्राप्त मृत्तिका मूर्तियों की बडे आकार की प्रतिमाएं लखनउ संग्रहालय में प्रदर्शित हैं।[33]

अहिच्छत्रा से प्राप्त चतुर्भजी देवी की पूर्व मध्यकाल की मृण्मूर्ति (मथुरा संग्रहालय) मेषवाहिनी स्त्री, हाथी से लडते हुए एक नवयुवक, डफ बजाता एक बालक, स्तवरक नाम पारसी वस्त्र धारण किये नर्तकी अनेक शीर्ष मातृदेवी की मृण्मूर्ति आदि उल्लेखनीय है।

अहिच्छत्रा से प्राप्त मृण्मूतियों पर विस्तृत लेख अमलानन्द घोष एवं पाणिग्राही नू एशियन्ट इंडिया में दिया है। यहॉ होने वाले उत्खनन से विभिन्न कालों के मृण्पात्र,जिन पर स्वास्तिक,, नंदिपाद, शंख, मत्सत्य का अलंकरण है, मिलते हैं। स्त्री–पुरूषों की अनेक लघु प्रतिमाएं, हाथी, घोडे आदि पशुओं की मध्यकालीन मृण्मूर्तियों के साथ अनेक सिर वाली पूजनीय मूर्तियॉ सती–सत्ता के प्रतीक मल्लयुद्ध के अंकन के मृण्मवशेष मिले हैं। मिट्टी की मूर्तियों में बुद्ध,विष्णु, सूर्य, अग्नि, शिव, पार्वती, गणेश, कार्तिकेय, कुबेर की प्रतिमाएं मिली हैं। विष्णु की चतुर्भजी शंख, चक्र गदा लिए मूर्ति उललेखनीय हैं। जिनके भौंहों के मध्य उर्णा है। सूर्य की मृण्मूर्तियॉ भी यहॉ से प्राप्त हूई हैं। औदिच्य वेश में सूर्य प्रदर्शित है। ये मूर्तियॉ गोलाकार हैं। उपर के आधे भाग में सूर्य एवं निचले भाग में सप्तरथ उत्कीर्ण किये गये हैं।

कुछ मूर्तियों में सारथी अरूण तथा सूर्य के अन्य सहायक अंकित हैं। शिव–पार्वती की अलंकृत केश राशि वाली प्रतिमाएं विशेष हैं। जटा–जूट के विपरीत मृत्तिका शिल्पकारों ने पार्वती का मस्तक अलंकृत केश विन्यास से सजाया है। ये प्रतिमाएं अहिच्छत्रा के शिल्पकारों की उत्कृष्ठा के द्योतक हैं। इसी

प्रकार चौकोर ठीकरे पर किन्नर मिथुन का उत्कीर्णन एवं एक अन्य ठीकरे पर दो स्थारूठ धनुर्धारी के युद्ध का अंकन मिलता है। ये ठीकरे गुप्तकालीन हैं। गुप्तकाल एवं मध्यकाल के कुछ मृतफलक ऐसे मिले हैं जिन पर विविध आमोद–प्रमोद खेल–तमाशों आदि का अंकन है। एक ठीकरे पर दक्ष प्रजापति के यज्ञ का विध्वंस करते शिव के गणों का दृश्य है। दूसरे पर श्वि–गण लोग मोदकों के लिए आपस में झगडते दिखाये गए हैं। इसी प्रकार कुश्ती लडते, हाथी के साथ युद्ध करते हुए, धनुष बाण चलाते हुए, अनेक प्रकार के बाजे बजाते या नृत्य करते हुए मानव का मनोरंजक अंकन भी अहिच्छत्रा में मिलता है।[34]

अहिच्छत्रा, मथुरा, कुशीनगर, पिपरावां, कौशाम्बी आदि स्थानों के अवशेषों से ऐसा प्रतीत होता है कि शुंगकाल से गुप्तकाल तक मृत्तिका शिल्प ने प्रस्तर कलाकारों के समान अपनी कला को ना केवल विस्तार दिया बल्कि सामाजिक एवं लोकजीवन, वेशभूषा, धार्मिक मान्यताओं, आमोद–प्रमोद, रीति–रिवाजों को अपनी कला में सम्मिलित कर मिट्टी के माध्यम से श्रेष्ठ से श्रेष्ठ सुन्दर आकर्षक शिल्प का सर्जन किया।

## निष्कर्ष

इस प्रकार हम संक्षेप में कह सकते हैं कि हाथा से गठकर बनाये गये ठीकरों से मृत्तिका शिल्प का प्रयोग सम्पूर्ण भारत में चाहे वैश्या टेकरी जैसे स्तूपों के निर्माण में हुआ हो, चाहे भवनों के निर्माण के साथ विविधतापूर्ण ईंटों के निर्माण सीलों, सांचों, लोक जीवन के उपकरण, पात्रों, खेल सामग्रियों और श्रेष्ठतम मूर्तियों के निर्माण में प्राचीनकाल से वर्तमान पर्यन्त निरन्तर उन्नत अवस्था में जारी है, यह ना केवल शिल्पियों की जीविका का माध्यम है बल्कि कला का भी और लाखों भरतीयों की आवश्यकता भी है।

## सहायक सामग्री


1. मनु – 10/106
2. जैन हरिवंश पुराण –17.180
3. अग्रवाल वासुदेवशरण –भारतीय कला पृ. 56
4. चक्रवर्ती, दिलीप के. –प्रि. इंडसिट्यल इंडियन आयरन, प्रकाशित इण्डियन होराइजेंस –33.1–2, 1984 पृ. 288
5. वही, पृ. 289
6. मिश्र एस.एम. – हडप्पन कल्चर, पृ. 42
7. मन्चन्दा,ओ. – हडप्पन पोटरी ;दिल्ली 1972द्ध पृ. 2
8. मिश्र एस.एम.– प्राचीन भारत में आर्थिक जीवन पृ. 130
9. मकाई–इण्डस सिविलाइजेशन 1935. पृ. 123
10. मैकडोनल ए.ए. – वैदिक इण्डेक्स 2, पृ. 176
11. वही, पृ. 171 एवं 193
12. तैतरिय ब्राहमण 1/4/13
13. शतपथ ब्राहमण 5/6/4/14
14. ओमप्रकाश – प्राचीन भारत का आर्थिक इतिहास, पृ. 124
15. बनर्जी,एन.आर. – इंडियन प्री हिस्टरी; पूना 1965द्ध
16. पोटरी इन एंशियन्ट इडिया, पृ. 305–308
17. वही, पृ. 307
18. अर्थशास्त्र 2/18
19. महाभाष्य 3/1/92
20. मार्शल, टैक्सिला खण्ड 2 पृ. 398
21. याज्ञवल्क्य 3/146
22. वृहतसंहिता, 15/1
23. वही, 16/28
24. वजपेयी, के.डी. – अहिच्छत्रा, पृ. 16
25. मुखर्जी आर. के. – एशियन्ट इंडिया, पृ. 48
26. वही, पृ. 120–121
27. मिश्रा एस. एम. – हडप्पन कल्चर पृ. 163
28. वाजपेयी, के. डी. – उतर प्रदेश युगे–युगे, पृ.12
29. वही, पृ. 25
30. वही, पृ. 26
31. वही, पृ. 30
32. वही, पृ. 32
33. वही, पृ.– 34
34. वाजपेयी के0 डी0 – अहिच्छत्रा पृ. 16–19